2

मख्य वचनः लूका 22:14-20

प्रभु-भोज का अर्थ (2)

यीशु इस संसार में मनुष्य बन कर आया, मांस और लहू बनकर वह 3½ साल तक प्रचार करता रहा। उसने दुःख सहा, क्रूस पर चढ़ाया गया, मर गया, दफ़नाया गया और तीसरे दिन मुर्दों में से जी उठा। तब वह स्वर्ग में उठा लिया गया, जहां अब उसे सारे स्वर्ग और पृथ्वी पर अधिकार दिया गया है (मत्ती 28:18; इफिसियों 1:20-23; 1 पतरस 3:22)। अगली विशेष घटना उसका द्वितीय आगमन होगा (यूहन्ना 14:3; 1 कुरिन्थियों 15:22-27)। प्रभु-भोज के द्वारा मसीहियों को इन बातों को याद कराया जाता है, और उसकी मृत्यु का तब तक प्रचार किया जाएगा, जब तक वह दोबारा नहीं आ जाता।

प्रभु-भोज का अर्थ मसीहियों के लिए इन मूल सिद्धांतों पर केन्द्रित है:

- यीशु और उसकी मृत्यु को याद रखना।
- यीशु हमारे लिए क्या है, इस बात पर मनन करना।
- आत्मिक रूप में उसके साथ सहभागिता करना।
- परमेश्वर को यीशु के लिए धन्यवाद देना।
- उसे परमेश्वर का पुत्र मसीहा मानते हुए उसका सम्मान करना।
- प्रभु और मसीह मानते हुए उसके प्रति आदर भाव दिखाना।
- ज्यादा समर्पण के लिए प्रेरित होना।
- मसीहियों के साथ एक पवित्र मंडली के रूप में सहभागिता करना।
- उसके मांस और लहू में आत्मिकता के साथ हिस्सा लेना।
- नई वाचा को मानना व पहचानना और उसका प्रचार करना।
- उसके वचनों के अनुसार अपने जीवनों को चलाना।
- उसके जीवन, मृत्यु और जी उठने और उसके वापस आने का प्रचार करना।
- आत्मिक मज़बूती और ताज़गी पाना।

आज यीशु को मानने वाले उसकी आत्मिक उपस्थिति को पहचानते हुए उसके साथ प्रभु-भोज में उसके दोबारा वापस आने तक सहभागिता कर सकते हैं (1 कुरिन्थियों 11:26)। शारीरिक वस्तु का खाना हमें यह याद दिलाता है कि किसी समय वह शारीरिक रूप में उपस्थित था। आज चाहे हम उसे देख नहीं सकते, लेकिन उसके शरीर का प्रतीक प्रभु-भोज हमें यह याद दिलाता है कि वह हमारे साथ है और हम उसकी आत्मिक उपस्थिति का आनन्द ले सकते हैं ''क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहां मैं उन के बीच में होता हूं'' (मत्ती 18:20)। उसने अपने लोगों के साथ जगत के अन्त तक रहने का वादा किया है (मत्ती 28:20)।

इन सच्चाइयों पर विचार करते हुए ''यादगारी स्मरण'' वचन पर हमारे सामान्य इस्तेमाल से अधिक बातें शामिल हो सकती हैं।

हम मसीह के साथ सहभागिता पाते हैं

प्रभु-भोज में हम यीशु के साथ संगति या सहभागिता करते हैं (1 कुरिन्थियों 10:16)। यीशु अकेला नहीं है, जो उसे हमारी संगति की जरूरत है; परन्तु अपने प्रेम के कारण वह उन सबके साथ सहभागिता करना चाहता है, जिन्हें उसने बनाया है। यह परमेश्वर की हनोक के साथ बातचीत में स्पष्ट होता है, जो उसके साथ चलता था (उत्पत्ति 5:24; इब्रानियों 11:5) और वफ़ादार भविष्यवक्ता एलिय्याह (2 राजाओं 2:11) भी उसके साथ था। याकूब ने लिखा, ''जिस आत्मा को उसने हमारे भीतर बसाया है, क्या वह ऐसी लालसा करता है, जिसका प्रतिफल डाह हो?'' (याकूब 4:5; NRSV)। यीशु हमारी संगति चाहता है (प्रकाशितवाक्य 3:20) लेकिन हम वे लोग हैं, जिन्हें उसकी संगति की आवश्यकता है। उसका प्रभु-भोज एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हमारा रिश्ता उसके साथ सम्भवतया मज़बूत बनता है।

मेरे दादा ने मरने से पहले मुझे जेब में रखने वाला एक चाकू दिया था, जो उनके पास पिछले कई सालों से था। जब भी मैं उस चाकू को उठाता हूं, मुझे अपने दादा की याद आती है। आज चाहे उन्हें गुजरे हुए कई साल बीत चुके हैं, लेकिन उनके साथ बिताया गया समय मुझे आज भी याद आ जाता है। इसी तरह जब हम रोटी और प्याले में हिस्सा लेते हैं तो हमें याद आना चाहिए कि यीशु हमें हमारे गुनाहों से बचाने के लिए इस संसार में आया और हमारे पापों के लिए उसने अपने प्राण दे दिए, क्योंकि वह हमसे प्रेम करता है।

प्रभु-भोज यीशु की आत्मिक उपस्थिति का शारीरिक प्रतीक है, जो हमें उसके साथ सहभागिता करने में मदद करता है (यूहन्ना 20:29)। यह हमारे जीवन को रोशनी में चलने का एक हिस्सा है, जिसके द्वारा हमारी पिता, पुत्र और मसीही भाई बहनों के साथ संगति होती है (1 कुरिन्थियों 1:9; 1 यूहन्ना 1:6, 7)।

यीशु के हमारे लिए अपना लहू और मांस देने के द्वारा हम उसकी बड़ी-बड़ी खूबियों को पहचान सकते हैं। प्रभु-भोज हमें उसकी दया, प्रेम, सम्भाल और दासता पर मनन करने में मदद करता है, ''इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे'' (यूहन्ना 15:13)।

पहले लेखकों ने यीशु के इस सांसारिक जीवन की याद में रोटी और दाखरस का इस्तेमाल किया। इस प्रतीक ने उसके इस संसार में आने, उसके बलिदान और उसके दुखों पर मनन करने में उनकी सहायता की। उन्होंने इस प्रतीक को एक प्रतिरूप माना, न कि यह उसके लहू और मांस में बदल जाता है।

हम मसीही संगति का अनुभव करते हैं

यीशु को स्मरण करके मसीही लोग उसके साथ समय बिताते थे। यीशु के साथ भोज करते हुए हम उसकी देह अर्थात कलीसिया के साथ संगति करते हैं:

इस प्रभु भोज का मुख्य आकर्षण मसीह की [आत्मिक] प्रस्तुति और उस उपस्थिति का अनुभव करने वालों की संगति के दो धुरों के गिर्द रहता है। ...

... ''रोटी तोड़ने'' के दौरान आरम्भिक मसीही लोगों के द्वारा दिखाया गया आनन्द इस तथ्य में नहीं मिलता कि इकट्ठा हुए चेले क्रूस पर चढ़ाए गए अपने प्रभु के शरीर को खाते और लहू को पीते हैं बल्कि जी उठे *मसीह* के साथ खाने की समझ में है जो सचमुच में उनके मध्य में है। ...[1]

दूसरे मसीहियों के साथ प्रभु-भोज में सहभागी होकर हम दर्शाते हैं कि एक साथ प्रभु-भोज में हिस्सा लेकर हम एक-दूसरे के साथ सहभागिता करते हैं। वह अपने लोगों से चाहता है कि वह उसकी आराधना उसके साथ संगति में करें और उसके लोगों के साथ उस मेज़ में भी हिस्सा लें।

लदीकिया की मण्डली द्वार पर यीशु के खड़े होने और खटखटाने का चित्रण उसके उनके साथ खाकर उनकी संगति और सहभागिता की उसकी इच्छा को दिखाता है। अफसोस उन्होंने उसके लिए द्वार बंद कर दिया था (प्रकाशितवाक्य 3:14-20)। यदि हम उसे याद किए बिना उसकी मेज़ से खाते और पीते हैं तो हम भी उसके लिए द्वार बन्द कर रहे हैं। वह हमारे साथ सहभागिता करना चाहता है।

हम यीशु का प्रचार करते हैं, वचन जो देहधारी हुआ

प्रभु-भोज में सांसारिक चीज़ों का इस्तेमाल यीशु के देहधारी होने का प्रचार करता है, देह में परमेश्वर का होना (मत्ती 1:23)। वह कोई प्रेतात्मा नहीं था, जो मानवीय रूप में आया, बल्कि उसने मरियम के द्वारा जन्म लेकर ने सारी मानव जाति की तरह शारीरिक रूप धारण किया (इब्रानियों 2:14)।

यीशु ने शारीरिक रूप धारण किया ताकि वह मानवीय अनुभव को समझ सके (इब्रानियों 4:15)। उसने खाया, पीया, वह सोया, जानवर की सवारी की और क्रूस पर कीलों से जड़ा गया। उसके शरीर को धोया गया उस पर इत्र लगाया गया और उसे पूरी तैयारी के साथ कफ़न में लपेट कर कब्र में रखा गया। यहां तक कि जी उठने के बाद उसे छुआ भी जा सकता था।

नया नियम साफ़ सिखाता है कि जब यीशु इस संसार में था तब उसका शारीरिक रूप था।

- यीशु जो वचन था, देहधारी हुआ (यूहन्ना 1:14)।
- वह एक स्त्री से पैदा हुआ (मत्ती 1:18, 25)।
- वह शरीर के अनुसार दाऊद के वंश से पैदा हुआ (रोमियों 1:3)।
- वह शारीरिक रूप में हर तरह से मनुष्य जाति की तरह था (फिलिप्पियों 2:7, 8; इब्रानियों 2:17)।
- क्योंकि वह उसी लहू और मांस का भागी हुआ जो सारी मनुष्य जाति का है, वह संसार के पापों लिए मर सकता था (इब्रानियों 2:14)।
- जी उठने के बाद उसका मांस और हड्डियां थीं (लूका 24:39, 40)।
- एक शारीरिक मनुष्य होने के नाते उसे मानवीय हाथों से छुआ जा सकता था (मत्ती

28:9; लूका 24:39; यूहन्ना 20:17; 1 यूहन्ना 1:1) जो उसे कील ठुके हाथों और उसकी भाले से छेदी पसली को जांच सकते थे (यूहन्ना 20:27)।

यीशु स्वर्ग से पृथ्वी पर मानवीय रूप धारण करके आया (यूहन्ना 1:14)। जो उसे नकारते हैं वे मसीह विरोधी हैं (2 यूहन्ना 7) कहने का भाव उसे विरोध में हैं। भोज की रोटी और कटोरा उसकी शारीरिक सच्चाई के लहू और मांस के प्रतीक हैं।

यह कहते हुए "यह मेरी देह है" (मत्ती 26:26), यीशु ने इसमें अपना पूरा शरीर और अपने आप को पूरी तरह से मनुष्यजाति के लिए बलिदान के रूप में शामिल कर लिया। उसके पूर्ण बलिदान का मतलब था, पूरी तरह से अपने आप को बलिदान करना न सिर्फ शरीर को।[2]

हम अपने नई वाचा के अधीन होने को समझते हैं

वाचा एक अनुबन्ध या समझौता है। नई वाचा पहली से बेहतर है (इब्रानियों 8:6) और उसने वो दिया जो पहली वाचा नहीं दे सकी (रोमियों 8:3, 4; इब्रानियों 10:1-4)। नई वाचा ने यीशु के लहू के द्वारा माफी को सम्भव किया (इब्रानियों 9:22) और स्वर्ग में अनन्त जीवन की आशा दी (1 पतरस 1:3, 4)।

पहली वाचा जानवरों के लहू को समर्पित थी, जो यीशु के लहू का प्रतिबिम्ब थी (निर्गमन 24:5-8; इब्रानियों 9:18-20) जिसके नई वाचा को समर्पित किया गया (मत्ती 26:28; मरकुस 14:24; लूका 22:20; 1 कुरिन्थियों 11:25)। यीशु के एक ही बार किए गए बलिदान के द्वारा पापों की क्षमा होती है और दोबारा उन्हें याद नहीं किया जाता (इब्रानियों 10:12, 14, 17)।

इस्राएली जब मिश्र की गुलामी से निकले तब परमेश्वर ने उनके साथ पहली वाचा बान्धी दस आज्ञाओं को सम्मिलित करके (निर्गमन 34:27, 28; 1 राजाओं 8:9, 21)। "और उसने तुमको अपनी [इस्राएल; व्यवस्थाविवरण 4:1] वाचा के दसों वचन बनाकर उनके मानने की आज्ञा दी; और उन्हें पत्थर की दो पट्टिकाओं पर लिख दिया" (व्यवस्थाविवरण 4:13)। नई वाचा ने पहली वाचा अर्थात पुरानी वाचा (इब्रानियों 8:6-13; 10:9) का स्थान ले लिया।

मसीही दूसरी वाचा, नई वाचा के अधीन है, पहली वाचा पुरानी वाचा के अधीन नहीं। पहली को एक तरफ कर दिया गया ताकि दूसरी को स्थापित किया जाए। प्रभु-भोज में हिस्सा लेकर हम यह दर्शाते है कि हम नई वाचा के अधीन हैं, जो लहू के द्वारा (समर्पित) शुद्ध की गई है (मत्ती 26:28)।

हमें आत्मिक शक्ति मिलती है

कुरिन्थुस में कुछ मसीही आत्मिक रूप में कमज़ोर थे और उनके मन में प्रभु-भोज की गलत तस्वीर थी; उन्होंने "देह को न पहिचाना" (1 कुरिन्थियों 11:29, 30)। प्रभु-भोज केवल उनको ही आशीषित करता है, जो रोटी और दाखरस से जुड़े इसके तात्पर्य को समझते हैं।

जैसे भोजन शारीरिक ऊर्जा प्रदान करता है, वैसे ही प्रभु-भोज हमें आत्मिक ऊर्जा प्रदान करता है। जैसे भोजन खाने से शारीरिक ऊर्जा और अच्छी सेहत मिलती है उसी प्रकार यीशु पर मनन करने से हमें आत्मिक शक्ति मिलती है।

यीशु के लहू का प्रतीक होने के नाते दाखरस हमें आत्मिक जीवन देता है। उसके लहू के द्वारा हम आत्मिक आशीष पाते हैं।

यीशु यूहन्ना 6:55 में प्रभु-भोज की बात नहीं कर रहा था, जब उसने कहा, ''क्योंकि मेरा मांस वास्तव में खाने की वस्तु है और मेरा लहू वास्तव में पीने की वस्तु है।'' तौभी उसकी बातों के संकेतों और उसके लहू और प्रतीकों में भाग लेने के द्वारा हमें मिलने वाली आत्मिक सामर्थ और जीवन के कारण भोज पर निर्भर होते हैं। रोटी और पेय अब हमारी शारीरिक भूख मिटाने के अपने सामान्य उद्देश्य को पूरा नहीं करते। इसके बजाय वे हमें आत्मिक खुराक देते हैं और यीशु के शरीर और लहू के महत्व को दृश्य रूप में याद दिलाने का काम करते हैं अब रोटी और दाखरस हमारी शारीरिक भूख को शान्त करने का काम नहीं करते, बल्कि अब वे हमें आत्मिक शक्ति प्रदान करते हैं और हमें यीशु की देह और लहू का अर्थ याद दिलाते हैं।

सारांश

प्रभु-भोज नये नियम के मख्य विषय को साकार करता है। यह यीशु को सामने रखता है और हमें अवसर प्रदान करता है कि हम इस पर अपने प्रभु और बचाने वाले के रूप में मनन करें, जो हमारे लिए मरा, और जी उठने के बाद स्वर्ग में अपने सिंहासन पर विराजमान है। प्रभु-भोज के द्वारा हमारी उसके साथ आत्मिक सहभागिता होती है और स्वर्ग में उसके साथ अनन्त जीवन पाने की आशा मिलती है, जिसका वादा उसने अपनी नई वाचा में दिया है (देखें इब्रानियों 8:6; 1 पतरस 1:3, 4)।

टिप्पणियां

[1]ऑस्कर कलमन एंड एफ़. जे. लीनहार्डट, *एसेस ऑन द लॉर्ड'स सप्पर,* अनु. और संपा. जे. जी. डेवीस (कैब्रिज: लटरवर्थ प्रैस, 1958; रिप्रिंट, अटलांटा, जार्जिया: जॉन नॉक्स प्रैस, 1975), 16 में ऑस्कर कलमन, ए ''दि ब्रेकिंग ऑफ़ ब्रेड एंड दि रिज़रक्शन अपीयरियेंसिस''। [2]स्कॉट मैकोर्मिक, जूनि., *द लॉर्ड'स सप्पर: ए बिब्लिकल इंटर्प्रिटेशन* (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1966), 16.

प्रभ भोज की भाषा

नया नियम प्रभु-भोज के विभिन्न शब्दों का इस्तेमाल करता है। इन्हें देखने से हमें प्रत्येक सप्ताह के पहले दिन की इस घटना के महत्व की झलक मिलती है।

''*रोटी जिसे हम तोड़ते हैं*'' (1 कुरिन्थियों 10:16)। ''*Klao*'' (तोड़ों) तोड़ना क्रिया शब्द या ''*klasis*'' संज्ञा (तोड़ना) कुछ मामलों में प्रभु-भोज के लिए (प्रेरितों 2:42; 20:7; 1 कुरिन्थियों 10:16)। ''तोड़ना'' का यह रूप सचमुच के रोटी[1] को तोड़ने और सामान्य भोजन के लिए इस्तेमाल होता है (प्रेरितों 2:46)। ''रोटी तोड़ना'' वाक्यांश का इस्तेमाल आरम्भिक कलीसिया के साहित्य में प्रभु के भोजन अर्थात प्रभु-भोज के लिए होता है।

''*सहभागिता*'' (KJV)। ''*Koinonia*'' शब्द (1 कुरिन्थियों 10:16) का अर्थ ''बांटना'' (NASB) या ''भाग लेना'' है (NIV)। यह यीशु के शरीर और लहू की आत्मिक भागीदारी बांटने का वर्णन करता है।

''प्रभु की मेज़'' (1 कुरिन्थियों 10:21)। ''प्रभु की'' (*kuriou*) सम्बन्धकारक संज्ञा है। ''जो प्रभु से सम्बन्धित मेज़'' का अर्थ देता है। जिसका अर्थ यह है कि मेज़ पर प्रतीकों के साथ हुई आराधना[2] उसके नमूने के अनुसार है।

''प्रभु-भोज'' (1 कुरिन्थियों 11:20)। इस अभिव्यक्ति का अर्थ यह नहीं है कि भोज प्रभु का है। ''प्रभु का'' ''*kuriakon*'' शब्द सम्बन्धकारक संज्ञा नहीं बल्कि भोज का अर्थ देता निर्देषण है। यह भोजन प्रभु के सम्मान में, जैसे प्रभु के सम्मान का दिन ''प्रभु का दिन'' (प्रकाशितवाक्य 1:10) है।

कुछ लोग गलती से प्रभु-भोज को ''सेक्रामेंट'' कहते हैं अर्थ है कि उस प्रतीक के द्वारा एक संस्कार जिससे पवित्र करने वाला अनुग्रह या आशीष मिलती है। बपतिस्मा को भी कुछ लोग सेक्रामेंट मानते हैं, जिससे पापी के द्वारा आशीष मिलती है। इसके विपरीत शुद्ध किया जाना यीशु के लहू के द्वारा सम्भव होता है (प्रकाशितवाक्य 1:5) और बपतिस्मा लेने के कार्य के दौरान प्राप्तकर्त्ता के मन में आत्मिक भागीदारी के द्वारा काम करता है (रोमियों 6:4-8, 17, 18)। प्रभु-भोज को एक संस्कार के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए जिससे मसीह के सोच समझकर आज्ञापालन से इसमें भाग लेने वालों पर विशेष अनुग्रह होता है।

''यूखरिस्ट'' ''धन्यवाद'' के अर्थ वाला यूनानी शब्द का लिप्यंतरण, जिसका रोटी और दाख के रस के लिए दिए जाने वाले धन्यवाद की अभिव्यक्ति के कारण प्रभु-भोज के सम्बन्ध में गलत इस्तेमाल होने लगा। एक टीकाकार ने कहा, ''ध्यान दिए जाने वाली पहली बात [*यूखरिस्त*] इसका धन्यवाद के वचन के अनुसार अर्थ से एक स्पष्ट नाम में बदला जाना है और हम मुख्य शीर्षक अर्थात प्रभु के भोज की बात कर सकते हैं।''[3]

टिप्पणियां

[1]देखें मत्ती 14:19; 15:36; 26:26; मरकुस 8:6, 19; 14:22; लूका 22:19; 24:30; प्रेरितों 20:11; 27:35; 1 कुरिन्थियों 10:16; 11:24. [2]रोटी और दाखरस ''प्रतीक'' इस बात में हैं कि वे मसीह के शरीर और लहू के प्रतीक या प्रतिनिधि हैं। [3]चार्ल्स हेबर्ट, *दि लार्ड'स सपर: अनइंस्पायर्ड टीचिंग,* अंक. 1 (लंदन: सीले, जैकसन एंड हैलीडे, 1879), 28.